

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही ।

# ग्रन्थ विवेक सागर

(भाखल दरिया साहेब)

साखी - 9

सत्तगुरु मत हृदय मम, पद पंकज करुँ ध्यान ।

लोचन कंज मज्जन करो, सुधर संत सुजान ॥

चौपाई

अंजन गुरु पद मञ्जन किजै । आखार मधुर मनोहर दिजै । ११ ।

सतगुरु पदुम पदारथ लिजै । अमृत प्रेम सुधारस पिजै ॥२॥

हरेवो पाप तन ताप शरीरा । विषम व्याधि तन लागु न पीरा ॥३॥

सज्जन जन सुखा सागर नीका । गयो विहाय कुमति सब फीका ।४।

निसुवासर गुन अतीत अमाना । धन्य धन्य गुरु ज्ञान बखाना ॥५॥

अति अधीन लीन पद हीता । भयो जगत मंह विमल पुनीता । ६ ।

जेहि कुल भक्ति भाव बैरागा । करे विवेक सो संत सुभागा ॥७॥

धन्य सो गांव ठांव प्रधाना । होहिं पुनीत भजन गुरु ज्ञाना । ८ ।

आपु तरहि तारहीं कुल साथा । तरनि भव जल होहिं सनाथा । ६ ।

भक्त बरोबर तुले ना कोई । सुर पंडित नृप जो जग होई । १० ।

साखी - २

भक्ति विवेक विचारि के, अहे दीपक दिल ज्ञान ।

अति अधीन लीन पद पावन, परिमल घ्राणी अमान ॥

चौपाई

बिना विवेक भेखा सभ रोगी । सतगुरु प्रेम ना ज्ञान संयोगी । ११ ।

दर्पण दाग दरश किमि पावे । मुरुचा मैल करम सब लावे । १२ ।

मांजे मैली सो मुकुर निरंता । विमल प्रेम सुमिरहिं सभ संता । १३ ।

हृदय साफ साँच सतबानी । बिना साँच का मीच बखानी । १४ ।

कंचन कांच का यह है लेखा । सोना सुगन्ध साधु जन पेखा । १५ ।

पारस परसे भव निःकलंका । रहा कुधातु धातु निःशंका । १६ ।

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतगुरु पारस पदुम प्रकाशा। भय भंजन भौ वास सुवासा।१७। गंध सुगंध रंध्र इमी जागा। परिमल छत्र प्रेम रस पागा।१८। जांति-पांति कुल सब कोई फीका। रहा असाधु साधु भौ नीका।१९। भवो गुण गामी ज्ञान समीपा। तेजेवो दुर्मति अनल अनीपा।२०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साखी - ३ दुविधा दुरमति कुमति रस, सुमित सदा गुरु ज्ञान। ममता मद भ्रम भगिया, भयो विमल पद ध्यान॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जन्म प्रसंग संग गुरु ज्ञाना। विरह विवेक तेज अभिमाना।२१। तन मन धन सतगुरु सुख स्वामी। तेजि अभिमान गर्व सब गामी।२२। भयो पुनीत प्रीत हित ज्ञाता। करि उपकार वारि भव जाता।२३। गयो सनीप सर्व सुख राता। इमि करि सुमिरहि सतगुरु दाता।२४। सतगुरु पद पंकज अनुरागी। शीतल समीर प्रेमरस पागी।२५। मुक्ति महातम मत तेहि हाथा। सुमिरही ज्ञान गुण होहिं सनाथा।२६। नौका विकट निकट ज्यों डारी। घैँचि गुण गहि लेत निकारी।२७। अति बलवन्त अखाण्ड शरीरा। महा प्रबल तनु ततु गम्भीरा।२८। सो मम देखेवो विवेक विचारी। पूर्ण ब्रह्म भौ लागु न कारी।२९। जैसे अलि शावक संग लिन्हा। जहं तंह घ्राणी प्रकट कै दिन्हा।३०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साखी - ४ जैसे मधुकर मत में, अपने सुत लिए साथ। तैसे सतगुरु संग में, सब विधि किन्ह सनाथ॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जेहि नहिं भाव भक्ति गुरु ज्ञाना। सो पसु पक्षी चराचर जाना।३१। सुकठ श्वान ज्यों अन्य शरीरा। ज्यों बग बाऊर सायर तीरा।३२। अति चतुर चित गर्व शरीरा। परजीव घात जानु नहिं पीरा।३३। मीन मांस मदिरा करु पाना। साधु संगत सुनि मुदे काना।३४। सतगुरु निन्दहि बन्दहि जमजाला। साधु संगत बिनु भए बेहाला।३५। विषय वास रस बसी मुख बानी। बुड़ि मुवे भव सो अभिमानी।३६। भर्मित भवन कल्प वितु केता। जारि मारि तन करिहे प्रेता।३७। यहि विधि भरमि ठवर नहि पावे। बहुरि ना संत मंत गुण आवे।३८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	2	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सो	रमिता	रमि	जीव	जहाना। मीन	मांस रसना रस जाना।४०।
सतनाम	है	यह	सांच	वाँचु	गुरु	ज्ञाना। निगम नेति मुनि करे बखाना।३६।
सतनाम	साखी	-	५	एक	जीव	के वधते, महा पाप परवेश।
सतनाम	त्रीय	देवा	वध	होत	है,	ब्रह्मा विष्णु महेश॥
सतनाम	छन्द	तोमर	-	९	इमि	कहेवो तोमर छन्द, गुरु ज्ञान गमि बिनु मन्द॥
सतनाम	भव	भर्मित	भवन	में	प्रेत,	गुरु ज्ञान गमि नहि हेत॥
सतनाम	जम	दिन्ह	दारुन	दुःख,	गत	होत पछीला सुख॥
सतनाम	सभ	वैद्य	वैरी	होय,	सभ	औषध व्याधी समोय॥
सतनाम	अंग	अंग	व्यापेवो	शूल,	यम	पकरी बाधे मूल॥
सतनाम	इमि	प्राण	मिनती	किन्ह,	तब	लकुट सिर पर दिन्ह॥
सतनाम	सुत	वीत	संग	नाहिं	नारि,	जब दीन्ह या तन वारि॥
सतनाम	तब	चीहुँकि	छोडु	चीकारी,	इमि	तपत शीला डारी॥
सतनाम	लोह	मेख	रोकेवो	बाट,	इमि	सहेव जम के साट॥
सतनाम	महा	नरक	कुण्ड	अघोर,	जिमि	बांध डारेवो चोर॥
सतनाम	जो	मरे	पछिला	कूल,	होत	मेख बाजि शूल॥
सतनाम	जब	देखि	सबहि	अनाथ,	रोवे	शीश धुनि जम साथ॥
सतनाम	अति	विघन	भर्म	उदास,	जम	धैचि अपने पास॥
सतनाम	बिनु	दर्द	दया	हीन,	जिमि	अवटि काढ़ेव मीन॥
सतनाम	गुण	पाप	किमि	कहिं	योग,	सब पड़ा विपत्ति वियोग॥
सतनाम	छन्द	नराच	-	९	यह	गुण पापा भव में तापा, तपत शीला पर ले डारी।
सतनाम	कवन	निकारी	नरक	विकारी,	करत	पुकारी नर नारी॥
सतनाम	जन्म	पदारथ	गया	अकारथ,	हाथ	परा जम फंद डारी॥
सतनाम	अवरिक	वारा	करो	उवारा,	हारयो	बहुविधि भव भारी॥
सतनाम	सोरठा	-	९	गहेयो	ना	सतगुरु ज्ञान, इमि कारण जम शासन करे।
सतनाम	भुले	अति	अभिमान,	ममता	मद	भ्रम छाइया॥
सतनाम	3					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सतगुरु मत सत विमल विरोगा। अति सुगन्ध सागर नहिं सोगा।४१।	सतनाम	मुक्ति विराग भाग्य गुरु ज्ञाता। विषम सरोवर सो नहि राता।४२।	सतनाम	वार पार नहिं भर्म विरोधा। त्रिविध तीन ताप तन सोधा।४३।	सतनाम
सतनाम	जेहि वर देहि बहुरि नहिं आवे। लोभ से लाभ मुक्ति फल पावे।४४।	सतनाम	आदि विन्दक रवि तहां न जावे। सुमन सुगन्ध गंध सब आवे।४५।	सतनाम	रजनी रंग तहां नहिं देखा। नहिं तहां शशी सागर नहिं पेखा।४६।	सतनाम
सतनाम	जिमि नहिं जावन बीज अंकुरा। सहज ही अमृत है भरपुरा।४७।	सतनाम	ऐसन पंथ पथिक किमि गएऊ। सुरति रथ पवन चलि भएऊ।४८।	सतनाम	तापर हंस वंश गुण राजै। सुरति डोरि तहवा छवि छाजै।४९।	सतनाम
सतनाम	तन मन धन जिन्हि अपने किन्हा। करे विवेक शब्द लव लीना।५०।	सतनाम	साखी - ६	सतनाम	सतगुरु से परिचय करो, पांजी पंथ विचार।	सतनाम
सतनाम	अटल राज पद पाइहो, भव जल जाहिं न हारि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	जैसे वारिज वारि समेता। जल औ जलज दुनो निज हेता।५१।	सतनाम
सतनाम	जैसे भृंगा भाव फूल माता। भौ रस बस कतहिं न जाता।५२।	सतनाम	जैसे शिव शक्ति रस भोगी। यह गुण प्रेम है सदा संयोगी।५३।	सतनाम	जैसे चात्रिक चित अनुरागा। रहत एक रस दुजा न जागा।५४।	सतनाम
सतनाम	जैसे चन्द चकोर चित चोभा। दिव्य दृष्टि दिल इमि करि लोभा।५५।	सतनाम	जैसे मातु सुत हित कर जानी। पाले बहु विधि पलकहिं आनी।५६।	सतनाम	जैसे दुखी सुखी धन पावे। ज्यों आवे त्यों जतन करावे।५७।	सतनाम
सतनाम	जैसे कृषि करे किसाना। निस वासर तेही तत्व समाना।५८।	सतनाम	ऐसे चित गहि करो विचारा। गहो प्रेम सतगुरु पद सारा।५९।	सतनाम	एसो गुण गहि प्रेम सुधारी। रहो बरोबर लागु न कारी।६०।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७	सतनाम	एके मन एके दशा, एके गुण गहि पार।	सतनाम	भव में भटकि अटके नहिं, गहि लिजै करुवार॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	छोड़हु ओट कपट का मोटा। जाके कपट सोइ जन खोटा।६१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	4	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तन मन धन सतगुरु पर वारी। सदा सेत गुण कबही न कारी।६२।	कोयल करिया भीतर है स्वेता। बगुला उज्जवल भीतर प्रेता।६३।	पढ़ के वेद भए बग चतुरा। मीन मांस के निसदिन अतुरा।६४।	शास्त्र वेद पढ़ा पुनि गीता। बिना विवेक भेखा बहु कीता।६५।	गनिका गर्व गरुरे माती। शोभा सुन्दर है चहुं पाती।६६।	भीतर विष बाहर सब शोभौ। विरह वान जग इमि कर लोभा।६७।	अमृत मीच नीच यह करमा। दुवो बरोबर यही विधि धर्मा।६८।
अमृत पीवे जीवे दिन केता। विष संग्रह करि मरि भौ प्रेता।६९।	पति बरता पति और न दूजा। पदुम झलके सो पद पूजा।७०।	साखी - ८	सतगुरु पांव पदारथ, गवन करि छप लोक।	कहे 'दरिया' दरसत रहे, मिटे सकल सभशोक॥	चौपाई	संत मंत गुण गहिर गम्भीरा। शील संतोष रोष मति धीरा।७१।
जैसन मती तैसन गति कहेऊ। गुण गम्भीर विरला पद लहेऊ।७२।	धरती आकाश पवन औ पानी। पांच तत्व कवि कथा बखानी।७३।	खाक वाव इमि किन्ह खमीरा। आतस आव रचि सकल शरीरा।७४।	चारीउ रंग अंग में किएऊ। पंचवे तत्व शुन्य में रहेऊ।७५।	यही निरति निरंतर छाजै। सुरति शुन्य शब्द तहाँ गाजै।७६।	निगम अगम अगोचर कहेऊ। चंद सूर मन उड़िगन छएऊ।७७।	कटि से निगम जंघ पद किन्हा। कटि से ऊपर अगम रचि लिन्हा।७८।
पांव पताल सिस असमाना। तीन लोक महिमा कवि जाना।७९।	चौथा लोक काया ते भिन्ना। करे विवेक शब्द लौलिना।८०।	साखी - ९	काया करम कंह थापिया, पाप पून्य जेहि साथ।	सतगुरु मत नहि जानहि, सोइ परा जम हाथ॥	छन्द तोमर - २	जम जोर जग में जानी, इमि करत सव की हानि॥
मुनि निगम अगम विचारी, नहि जम फंद सम्भारी॥	नहिं काल करता चिन्ह, वोय तिरगुन ते हैं भिन्न॥	5	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	कोई तप तौलत जोग, फिरि विषय सागर सोग॥ नहिं शब्द सतगुरु सार, फिर रहत भव जल वार॥ सब खोजत काया वीर, वोय पुरुष सत शरीर॥ सभ भेख भरम अन्नत, कोइ जान सतगुरु मंत॥ जो गर्व गरुवा डारि, तिन्ह लिन्ह शब्द विचारी॥ सो हंस बंस गम्भीर, वोए वसहिं सरवर तीर॥ तहां जलज झलकत नीर, गुण विमल हंस शरीर॥ मृग मीन थिर न भाव, हंस रंग अंग सुभाव॥ वह लोचन लोल कपोल, वोय जगत में अनमोल॥ यह कृत्रिम कौवा काग, सर्व कर्म करता दाग॥ मति भरम भरमे आय, नहिं ज्ञान गमि कुछ पाय॥ इमि नीर छीर समेत, इमि देखहिं है सब सेत॥ छन्द नराच - २	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गुण विलगाना चतुर सुजाना, सन्मुख सतगुर सो आवै। सब तेजु बिकारा विवरण सारा, सार शब्द सौ इमि पावै॥ मनि उजियारा गुण गही पारा, वार कबहि नहि भव जावै॥ सो हंस हमारा करे विचारा, चरचा सतगुर पद गावे॥ सोरठा - २	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सुख सागर मंह वास, भव सागर कंह त्यागिए। वृगसे पुहुंप सुवास, अग्र अंग छवि छाइए॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	मार मरम जाने नहिं कोई। बसे कहां प्रगट किमि होई।८१। रोम रोम पर स्वेद शरीरा। बसे बिन्द त्रिकुटी के तीरा।८२। कमल मध्य रहे छवि छाई। तप के गुण सभ प्रकट देखाई।८३। ऊंचे रहे नीचे इमि ढारी। नीचे से फिर ऊंचे सुधारी।८४। मनोरथ पवन रहे तन राधी। काम देव कहु कैसे बांधी।८५। देखि शक्ति छवि रहे न थीरा। महा प्रचंड अहे बलवीरा।८६। गुण गहि घैंचु ग्यान करु थीरा। तब कस में आवे बलवीरा।८७। कड़ी कमान जो बाण सन्धाना। दिव्य दृष्टि में इमि पहिचाना।८८। मुद्रा चारि युक्ति करि योगा। निर्मल ग्यान भजु कबहि न रोगा।८९। उनमुनि निर्मल निरखे कोई। अहे विहंगम युक्ति समोई।९०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		साखी - १०				
सतनाम		सतगुरु पद पावन करे, पदुम झलके शीश। तीन लोक के कर्ता, चिन्ह परा जगदीश॥		सतनाम		
		चौपाई				
सतनाम		काम क्रोध दुई वीर है भाई। इनकी गति विरले लखि पाई।६१।		सतनाम		
		कन्द्रप लघु दीर्घ क्रोध विचारी। बसे कहां कहिए निरुवारी।६२।				
सतनाम		अहे ब्रह्माण्ड अखाण्ड कहावे। करखा पवन हृदय में आवे।६३।		सतनाम		
		जब हृदय में करे अंकुरा। अति प्रचण्ड होय होय बलवीरा।६४।				
सतनाम		कन्द्रप कंदला जाय छिपाई। अति त्रास भौ निकट ना आई।६५।		सतनाम		
		क्रोध शीतल तन के तप गयऊ। तब कन्द्रप प्रगट होय रहेऊ।६६।				
सतनाम		कामिनि कनक शोभा बहु भाती। चित्र उरेह देखे चहु कांती।६७।		सतनाम		
		भौहे बान कमान जो ताना। तब कन्द्रप उठ भये दिवाना।६८।				
		साखी - ११				
सतनाम		लोभ छोभ प्रीति करि, रहे नयन मह लागि। अति प्रीय प्रेम रसना रस, रसि वसि लीन्हो पागि॥		सतनाम		
		चौपाई				
सतनाम		मुनि मति रति गति कन्द्रप कामा। गुंथहि ग्रंथि सो बहु विधि वामा।६९।		सतनाम		
		स्वारथ संग्रह सर्व सरूपा। शक्ति संग रंग सब भूपा।१००।				
सतनाम		सो मन मगन आनन्द सोहाई। भवन भारजा भक्ति न आई।१०१।		सतनाम		
		रतन पदारथ जतन कराई। सुख सम्पत्ति बहु विधि चतुराई।१०२।				
सतनाम		वेद बकहिं सो भेद न जाना। गुरु औ सिख जो स्वारथ साना।१०३।		सतनाम		
		एके गति मति रहे समाई। मीन मांस बग इमि करिखाई।१०४।				
सतनाम		मति मराल की मरम न जाना। कछिया काग कपूत बखाना।१०५।		सतनाम		
		विधिनि भरम भव भरमहिं सोई। अति दुःख दारुन यमपुर होई।१०६।				
सतनाम		गुरु औ सिखावन लीन्हा। नयन विहुन कर्म सो कीन्हा।१०७।		सतनाम		
		आतम घात है पाप समेता। मरि मरि जग में होय फेरि प्रेता।१०८।				
		साखी - १२				
सतनाम		जब लागि दया न दरसे, परसे पाहन जानि। कहे दरिया दर छेकिए, बहु विधि करते हानि॥		सतनाम		
		7				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दया बिना क्या धर्म बखाना। बिना दया किमि गुण पहिचाना।१०६।	सतनाम	हरनी गउवा एके जाया। रुधिर एक गुण दुजा ना आया।११०।	सतनाम	मीन मांस मदिरा कर संग। अहे अपावन पाप उतंगा।१११।	सतनाम
सतनाम	फल औ फूल अंकुर जत अहई। यह सुख संत सदा गुण कहई।११२।	सतनाम	अंकुर वीर्य दूवो विलगि विरोग। करि जीव घात खाहिं चढ़ लोगा।११३।	सतनाम	पंडित वेद विमल गुण ग्याता। अति प्रसिद्ध सुनहि नृप बाता।११४।	सतनाम
सतनाम	अजया मारि मांस मुख दिएऊ। सो द्विज जन्म अकारथ किएऊ।११५।	सतनाम	विषय प्रीति रसना रस जीका। देही आशीष वचन सभ फीका।११६।	सतनाम	नौ गुण कांध तिलक रचि लीन्हा। नेम धर्म मिथ्या सम कीन्हा।११७।	सतनाम
सतनाम	ऐसन निगम निरुपन कीन्हा। महा पाप ताप सिर लीन्हा।११८।	सतनाम	साखी - १३	सतनाम	हंस बंश बग साथ करि, मान सरोवर जाहि।	सतनाम
सतनाम	बग कुसुंभ से प्रीति करि, वोय मुक्ता हल खाहि॥	सतनाम	छन्द तोमर - ३	सतनाम	इमि तोमर छन्द विचारी, सब ज्ञान गुण निरुवारी॥	सतनाम
सतनाम	इमि हंस वंश गम्भीर, वोय मानसरोवर तीर॥	सतनाम	बग धरत औंधा ध्यान, इमि करत विषया पान॥	सतनाम	इमि चंचल चतुर है चोर, बुद्धि कथत ग्यान अघोर॥	सतनाम
सतनाम	नहिं संत मंत सुख सोय, सब पाप गरहुआ होय॥	सतनाम	अघ सहेऊ अघ डर जानि, सब जगत करते मानि॥	सतनाम	नहिं साधु सर्व सरूप, पाखण्ड कर्म अनूप॥	सतनाम
सतनाम	इमि भेख विविध बनाय, गुण कहत नाही ओराय॥	सतनाम	जहां संत मत को भाव, तहां कुमति खेले दाव॥	सतनाम	पढ़ी वेद विमल पुनीत, सब भरम भाव अनीत॥	सतनाम
सतनाम	नहिं निरीख नृप कछुग्यान, जीव घात में परधान॥	सतनाम	जिन्ही कपट को पिठिकारी, इमि कुमति दिन्हो डारी॥	सतनाम	सो संत मंत गुण सार, इमि पियत प्रेम उदार॥	सतनाम
सतनाम	भव भरम कबहिं न होय, गुण विमल साधु समोय॥	सतनाम	इमि साफ संत निरंत, गहि ग्यान सतगुरु मंत॥	सतनाम		सतनाम



छन्द नराच - ३

यह मत सांचा सो भ्रम वांचा, कांचा कर्म करे कागा ।

हंस निनारा निर्मल सारा, सार शब्द गुण सो लागा ॥

विषम बेकारा करत अहारा, धार परा जम इमि दहिअं ।

करम सो करता इमि जग वरता, तरता किमि भवइमि रहिअं ।।

सोरठा - ३

सुमति सदा सुख संत, विमल विरोग अमान है।

इमि सतगुरु का मत, लघु दृग देखो विवेक करि ॥

चौपाई

काल सोइ जेहि काल के करमा । संत सोइ सुख सागर धर्मा । ११६ ।

निगम सोइ जो दया दिह्वावे । साधु सोइ निर्मल गुण गावे । १२० ।

ब्रह्मचारी जो ब्रह्म विचारे । पढ़ि के वेद कथा निरुवारे । १२१ ।

योगी सो जो जुगता मुक्ता । पाप पुन्य कबहिं नहिं भुक्ता । १२२ ।

सतगुरु सोइ सत शब्द दिढ़ावे । जीव मुक्ताय पाप सब जावे । १२३ ।

सतगुरु ग्यान गमि करु ज्ञाता । पाप पुण्य भव कबहि न राता । १२४ ।

मुक्ति पदारथ सब गुण गामी । प्रेम जुगित सुमिरो सत स्वामी । १२५ ।

मुक्ति पदारथा भव भ्रम नासा । पुहुप दीप सुख सागर वासा । १२६ ।

जहां अमर गुण हंस गम्भीर । परिमल अग्र बास रहु थीरा । १२७ ।

अनवन भाँति अमृत रस चाखो । वृगसे पुहुप अमि रस चाखो । १२८ ।

किमि करि यह गुण कहि निरुवारी । सब विधि आनन्द मंगलचारी । १२६ ।

साखी - १४

बृगसे पूहुँप अमान सब, मंद तहां नहिं होय ।

कहे दरिया दरसत रहे, गया करम सब खोय ।।

चौपाई

अनन्त अंत नहिं किमि निरुवारी । विशम्भर विश्व है अधिकारी । १३० ।

अति अनंग रंग भव राता । भोग भाग राग गुण ज्ञाता । १३१ ।

ललित मनोहर सुन्दर ताई । भवन भारजा रंग बनाई । १९३२ ।

यहि विधि कृष्ण क्रीड़ा बहु कीन्हा । गोपिन संग रंग रचि लीन्हा । १३३ ।

रति औ काम प्रीति बहु जाना । यही विधि कर्ता सब केहु माना । १३४ ।

ताल मृदंग समाज बनाया। मूखा मूरली गहि आपू बजाया। १३५।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुक शारद नारद मुनि गायेऊ। यह लीला गति लखि नहिं आयेऊ।१३६।						
आदि सनन्दन हरि अविनासी। सदा निरंजन घट-घट वासी।१३७।						
त्रिगुण रूप है ब्रह्म सरुपा। निगम नेति कथी कहेव अनूपा।१३८।						
सो निर्गुण सगुण होय आया। मन लीला गति भेद न पाया।१३९।						
साखी - १५						
सत पुरुष त्रिगुण नहीं, निर्गुण सगुण से भिन्न।						
अजर अमर गुण सतहहीं, यह पद सतगुर चिन्ह॥						
चौपाई						
वोए तो पुरुष सकल गुण गामी। वोय नहिं होहिं गोपिन के स्वामी।१४०।						
वोय नहिं भोग सोग है रोगा। अक्षय अमर गुण विमल विरोगा।१४१।						
तीन ताप उनके नहिं तापा। उत्पति प्रलय पुण्य न पापा।१४२।						
पुरुष एक मन अहै अनंता। गुण गहि घैंचि इमि जग बरता।१४३।						
ऐसन कर्ता मम तेहि जानी। सत सुगन्ध नीके पहिचानी।१४४।						
धोखा धन्धा भ्रम नहिं रहई। संशय सागर सो नहिं अहई।१४५।						
भगत भेष बहुते जग भयेऊ। यह गुण प्रगट विरले कहेऊ।१४६।						
कर्ता करम काल नहिं चीन्हा। भेख अलेख विविध मत लीन्हा।१४७।						
योगी यति पण्डित बहुज्ञाता। त्रिगुण फंद रचि हृदय राता।१४८।						
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर अहेऊ। गौरी गणपति फणपति कहेऊ।१४९।						
साखी - १६						
अक्षय वृक्ष गुण सत हैं, त्रिगुण यह संसार।						
उपजि बिनसी बहु वीरजग, दरिया कहहि पुकार॥						
चौपाई						
आपु विश्वम्भर विश्व पर अयेऊ। निरंजन इमिकर कर्ता भयेऊ।१५०।						
बल पौरुष सब इमिकर कहेऊ। दानव दैत्य सबै मिलि रहेऊ।१५१।						
खण्डेवो दैत्य अखण्ड न राखा। महि पर वीर जहां ले भाखा।१५२।						
लघु औ दृग भक्त परमीना। जीव जगत सब अहे अधीना।१५३।						
तपसी तप करि योग विरागा। दान पुण्य तीरथा प्रयागा।१५४।						
मुनि पण्डित पढ़ि वेद पुराना। नृप घर सादर बहुविधि माना।१५५।						
सोई काल सोई कर्ता भएऊ। दे प्रतिज्ञा सभे गुण गएऊ।१५६।						
गुड़ देखाय ईट मुखमारी। तीनि लोक बुद्धि भ्रम बेकारी।१५७।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भव सागर से होहिं न पारा। उलटि पलटि जम फंद पसारा।१५८।	सतनाम	यह बल देखि के सामर्थ किएऊ। वेद विमल जस इमि गुण गएऊ।१५९।	सतनाम	साखी - १७	सतनाम
सतनाम	सभै हमारे देश का, या दर परा भुलाय।	सतनाम	देखि शरद की चांदनी, उलटि वहां नहिं जाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	चुभा चित्त जो इहई नीका। ममिता मद बसि इमि करि जीका।१६०।	सतनाम	झूठी बात मीठी सब भावे। सतगुरु छोड़ि नरके के जावे।१६१।	सतनाम	धोखा दवरी जीव जंहड़ाई। जैसे प्रतिमा आरसी पाई।१६२।	सतनाम
सतनाम	ऐन भवन में श्वान भुलाना। अपने प्रतिमा से पिसमाना।१६३।	सतनाम	संकट विकट अटकि सभ रहेऊ। शीश पटकि मर्कट मुट्ठी गहेऊ।१६४।	सतनाम	लाल फूल फल उड़ि गयो भूआ। शीश पटकि के चली भौ सुआ।१६५।	सतनाम
सतनाम	हरि विश्वास त्रास जीव भएऊ। यहि विधि काल ठगौरी किएऊ।१६६।	सतनाम	साहु के माल चोर घर गएऊ। इमि करि जीव जग माह विकएऊ।१६७।	सतनाम	सतगुरु सत की मरम जाना। उलटि पलटि भव सिन्धु समाना।१६८।	सतनाम
सतनाम	चीक चोर अजया प्रति पाला। कर में करद जवह करि डाला।१६९।	सतनाम	साखी - १८	सतनाम	काले या जग पालिया, पलक करे नहिं भोर।	सतनाम
सतनाम	मीन मांस पोषन दिया, घैंचि आपनी ओर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	गज और बाज राज कर काजू। तीन सौ साठ पाप सिर छाजू।१७०।	सतनाम
सतनाम	अकरम करम करे दिन राती। छत्री को गुरु ब्राह्मण जाति।१७१।	सतनाम	यह विराग राग नहिं भएऊ। बुड़े भव जल निकलि न गएऊ।१७२।	सतनाम	संत द्रोह नर करहीं उपाधी। परे सो भव जल सिन्धु अगाधी।१७३।	सतनाम
सतनाम	भक्ति भंग सुने नृप काना। महा पाप गौ घात समाना।१७४।	सतनाम	संत के आदर करु सम्माना। विधनी भरम सब पाप ओराना।१७५।	सतनाम	संत के द्रोही देहि निकारी। इमि गुण महिमा वेद विचारी।१७६।	सतनाम
सतनाम	जल औ जोंक जलज एक पासा। मिले न महिमा कंज सुवासा।१७७।	सतनाम	इमि जड़ जग में पशुवत ज्ञाना। गीता पुराण सुना नहिं काना।१७८।	सतनाम	रतनागर भागर से भीन्ना। सीप स्वर्ग मोती रचि लीन्हा।१७९।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १६			
साधु	असाधु	संसार	में,	कहिं	कौड़ी	कहिं
कहिं	भक्ति	कहिं	भाव	में,	कहिं	डारि
					देत	जम
					जाल	१८०।
					जाल	१८१।
			छन्द तोमर - ४			
			प्रबन्ध छंद विचारि, गहि ज्ञान गुण निरुवारी॥			
			पढ़ी वेद विमल विरोग, जहां पाप पुण्य नहिं सोग॥			
			जब पुहुँप वृगसे सुबास, तब घ्राणी गुण तेहि पास॥			
			तहां सजल जल सुख कंज, मन मगन मधुकर संज॥			
			मधु प्रेम नेम निरंत, नहि विलगि विहरि तुरंत॥			
			तहां दिन दिन मणि चंद, निसुवासर प्रेम आनन्द॥			
			गुण रेशम डोरी संवारि, तहां झूलत उड़िगन झारी॥			
			तहां गौरी गणपति ध्यान, गुण विद्या वेद बखान॥			
			तहां गरजी घन घहराय, बुंद विमल सघन सुहाय॥			
			तहां निरखि निर्गुन रंग, छवि छटा चमकि तरंग॥			
			नहिं कृतम कौतुक जानि, पद परसी प्रेमहि सानि॥			
			नाही त्रिविधि ताप है अंग, सभ शोग सागर भंग॥			
			भव भरम भेद निराश, जन जाहिं सतगुरु दास॥			
			नहिं संशय सागर शूल, यह प्राण पति निज मूल॥			
			छन्द नराच - ४			
			मोह पिपासा सतगुरु नाशा, साधु संगति इमि पद गहिअंग॥			
			नाम निरंतर हृदय जंतर, जुगुति जानहि कथिसो कहिअंग॥			
			सब विधि नागर ब्रह्म उजागर, सागर सुख में दुःख दहिअंग॥			
			गुण गहि पारा किन्ह उपकारा, पार ब्रह्म परिचय करिअंग॥			
			सोरठा - ४			
			कहे दरिया सुनु संत, पद पंकज परिचय करो।			
			इमि सतगुरु को मत, बहुरि ना भव जल आवही॥			
			चौपाई			
			कासो छल बल या जग करई। छलि सो बड़ा निरंजन अहई॥१८२॥			
			दान पुण्य जग जो किएऊ। ताके छलत विलम्ब ना लएऊ॥१८३॥			
			बलि के छलेऊ सभे जग जाना। नृप नृग छलि कुआँ में ताना॥१८४॥			
			हरिशचन्द छलि जम शासन दिएऊ। नीच घर नीर भरावन किएऊ॥१८५॥			
			12			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नल के छलेव बड़े रस भोगी। चले त्यागि परे विपत्ति वियोगी।१८६।	सतनाम	जो नृप भए जगत मंह भारी। दर्ईत कर्म धरि ताहि पछारी।१८७।	सतनाम	औ जंगम जोगी जग मंह केता। शक्ति रूप छलि किन्हो प्रेता।१८८।	सतनाम
सतनाम	शंकर छलेवो महासिद्ध योगी। मोहनी रूप धरि कियो वियोगी।१८९।	सतनाम	ब्रह्मा छलेवो शक्ति नहिं चीन्हा। चारि मुख तेहि प्रगट कीन्हा।१९०।	सतनाम	शृंगी छलेवो जहां वन वासी। गनिका संग वोय भये उदासी।१९१।	सतनाम
सतनाम	साखी - २०					सतनाम
सतनाम	महा मुनि सब जगत में, केता छल बल कीन्ह।					सतनाम
सतनाम	अहे अनन्त अंत किमि कहिए, सतगुरु परिचय दीन्हा॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	ऐसन चरित्र कृष्ण मन राता। दुर्योधन का करो निपाता।१९२।	सतनाम	पहले दुर्योधन धरि मारों। पिछे पाप पाण्डव सिरे डारों।१९३।	सतनाम	दान पुण्य जग विदित करावों। पांचो जने हेवाल गलाओं।१९४।	सतनाम
सतनाम	मम चरित्र केहू नहि जाना। यह परिपंच हृदय मंह ठाना।१९५।	सतनाम	कहो पाण्डो से प्रगट बाता। दुर्योधन तुम्हें करिहे निपाता।१९६।	सतनाम	तुम कहं अंश विसु वो ना दिहें। राजकाज सुख अपनेहि लीहें।१९७।	सतनाम
सतनाम	पांचो जने वीर नाहि कहई। महा प्रचण्ड मम इन कह दहई।१९८।	सतनाम	घाट में क्रोध बैठ तब डोला। भीमसेन अर्जुन तब बोला।१९९।	सतनाम	करो पतन सभराज समेता। सौ जने जव चढ़िहें खेता।२००।	सतनाम
सतनाम	युधिष्ठिर बोले जो वचन विचारी। किमि करि गर्व किन्ह अधिकारी।२०१।	सतनाम	साखी - २१			सतनाम
सतनाम	शील संतोष सत गहु, करो विवेक विचारी।					सतनाम
सतनाम	यह बिसु काहु के साथ नहि, गये नृप हाथ पसारि॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	बन्धु विरोध धर्म कर नासा। का विसु बसे भया यम त्रासा।२०२।	सतनाम	कुल के घात पाप बड़ अहई। निगम नेति सदा गुण कहई।२०३।	सतनाम	राजकाज दुःख विपत्ति वियोगा। ऊंच नीच भवसागर सोगा।२०४।	सतनाम
सतनाम	दया धर्म पुण्य जेहि होई। तेहि बरोबर तुले ना कोई।२०५।	सतनाम	सुख सम्पत्ति दुःख दारुण देवे। राज काज पाप सिर लेवे।२०६।	सतनाम	केते नृप गये जम साथा। भर्मित भव में भए अनाथा।२०७।	सतनाम
सतनाम	13					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जेहि नहि भेद वेद परतीता। जेहि नहि धर्म दया दिल हीता।२०८।	सतनाम	जेहि नहिं यज्ञ योग नहि जापा। नहिं विचार पुण्य नहिं पापा।२०९।	सतनाम	सो जड़ जग में पशुवत ज्ञाना। गीता पुरान सुने नहि काना।२१०।	सतनाम
सतनाम	दे विश्वास घात जो करई। महापाप दुःखा दारुन दहई।२११।	सतनाम	साखी - २२	सतनाम	कहा युधिष्ठिर प्रेम करि, चित दे सुनहु कान।	सतनाम
सतनाम	सहजहि जो कुछ पाइए, सोई अमृत करि जान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	हँसके कृष्ण बोले तव बानी। सुनहु भीम यह अकथ कहानी।२१२।	सतनाम
सतनाम	अर्जुन जग में तुम बड़ बीरा। सब गुण लायक मति का धीरा।२१३।	सतनाम	सहदेव विद्या पढ़ि भये गुण ज्ञाता। नकुल सिंगार रहत मनराता।२१४।	सतनाम	युधिष्ठिर सत भगत् गुरुज्ञानी। सत वचन मिथ्या नहि जानी।२१५।	सतनाम
सतनाम	इनके संग कंदमूल खइहो। की किछु राजकाज हिय धरिहो।२१६।	सतनाम	छत्री के कर्म जो छित पर होई। लेहू कटाइ वीर भूमि सोई।२१७।	सतनाम	फिर मम दोष कबहि नहि दीजै। अबहि बात समुझ के लीजै।२१८।	सतनाम
सतनाम	अर्जुन अरज किन्ह कर जोरी। महाराज सुन विनती मोरी।२१९।	सतनाम	आपहिं दुर्योधन कहं जाई। परमारथा कर बात जनाई।२२०।	सतनाम	उन तुम बन्धु विरोध न किजै। भूमि भाग कछु उनहुं कहं दीजै।२२१।	सतनाम
सतनाम	साखी - २३	सतनाम	चले तुरंत रथ साज के, गये दुर्योधन के पास।	सतनाम	बहुत सादर आदर कियो, कीन्ह वचन परगास॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	कहें जनार्दन सुनो नृपराऊ। कहों वचन जो तेहि दिल भाऊ।२२२।	सतनाम	वंश अंश सब बन्धु तुम्हारा। मांगहिं वृत्ति देहु अंश हमारा।२२३।	सतनाम
सतनाम	दिये बने ना तो होत विरोधा। कहे कृष्ण सुनो दुर्योधा।२२४।	सतनाम	यह महि काहु के साथ न गएऊ। प्राण गये करधन तोरि लिएऊ।२२५।	सतनाम	भस्म भए रंग मिलिहें माटी। करहु विवेक देहु भूमि बांटी।२२६।	सतनाम
सतनाम	यहि विसु गये केते नृप राया। उत्पति प्रलय सभे दिखाया।२२७।	सतनाम	तेजि देहु वाद-विवाद न नीका। मम वचन जनि लागे फीका।२२८।	सतनाम	तेजहु भरम करम नही नीका। राजनीति गुण होइहें फीका।२२९।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तुम हित वचन कहा निरुवारी। अमृत संग्रह विष दुरि डारी।२३२।	सतनाम	जाकर दल बल देखिहों थोरा। सजिहैं रथ तुरे दुनो जोरा।२३३।	सतनाम	भक्त युधिष्ठिर मम प्रधाना। पारथ वीर अर्जुन समजाना।२३४।	सतनाम
सतनाम	बोली वचन विदा तब भयऊ। इनके कपट सदा ऊर रहेऊ।२३५।	सतनाम	हम से द्रोह सदा इन कीन्हा। पाण्डो पक्ष आपन करि लीन्हा।२३६।	सतनाम	दुइ पिता हैं दुइ महतारी। ताके लाज कवन है गारी।२३७।	सतनाम
सतनाम	छत्री के बुद्धि अहीर संग नासा। चोरी घर घर करत तमाशा।२३८।	सतनाम	बाम काम संग्रह सुख भएऊ। गोप सखा संग गाय चरयऊ।२३९।	सतनाम	यह प्रपंची बुद्धि सभ ठएऊ। हमे उन्हें विग्रह करि दिएऊ।२४०।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी-२५	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	इन कर कर्म है काल का, सभके कीन्ह विनाश।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	जो नृप जग में जाहिरा, करन चाहे सब नाश॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	नीके चिन्हा फिर पीछे भुलाना। बहुरि युद्ध किन्ह मनमाना।२४१।	सतनाम	भला घर तुम बायन दीन्हा। दलमल दुष्ट करो बलहीना।२४२।	सतनाम	सोरह जोजन छत्र विराजे। छित पर चले महा बल गाजै।२४३।	सतनाम
सतनाम	इनके समर सिखावन दिहों। बाणन मारि गरद करि लिहों।२४४।	सतनाम	सूरवीर सब कटक विराजै। बाण धनुष सबके कर छाजै।२४५।	सतनाम	इमि करि सबसे कहा विचारी। जब होय युद्ध लड़ों परचारी।२४६।	सतनाम
सतनाम	सन्मुख सुरा रण में रहिए। अगला पांव पीछे नहिं धरिए।२४७।	सतनाम	दुर्योधन वैन सभे निक लागा। वीर सूर सभे होय जागा।२४८।	सतनाम	मंत्री मंत्र कहे अस बाता। लडे भिरे जस करे विधाता।२४९।	सतनाम
सतनाम	काकर हानि भीरत दुई होई। यह सब कर्म कुमति के सोई।२५०।	सतनाम	नृप बुद्धि तुम्हें कौन सिखावे। जैसन गुण तैसन जग गावे।२५१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - २६	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	राजकाज जग विदित है, सभ लायक तुम योग।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	कुछ कारज कर दीजिए, भला कहे सभ लोग॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	16	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तुम मंत्री की पर उपकारी। किमि नहिं वचन जो बोले विचारी।२५२।	सतनाम	कृष्ण पक्ष पाण्डव कर लिएऊ। मम तन क्रोध बोध नहि भयऊ।२५३।	सतनाम	हनो सभे दुर्जन दल नीके। मंत्री मंत्र धरो यह जी के।२५४।	सतनाम
सतनाम	करि गहि चाप सावज वन घेरा। बिन सर बाण होय नहि जोरा।२५५।	सतनाम	जब लगी कुंजल सिंह न देखा। आपन बल पौरुष सभ पेखा।२५६।	सतनाम	केहरि दपटि छपटि जब आवे। कुंजल कंदल जाये छिपावे।२५७।	सतनाम
सतनाम	सो मम बाण धनुष कर राखा। सब दल दलि हों पण्डों साखा।२५८।	सतनाम	भुले गर्व कृष्ण इमि कहेऊ। है प्रपंच भेद नहिं पएऊ।२५९।	सतनाम	जाके राज काज प्रभु दियेऊ। आनकर धन देखि दुःख अति पैऊ।२६०।	सतनाम
सतनाम	देखत युद्ध सुधि सब जाई॥ तब पति अएयहु पांचों भाई।२६१।	सतनाम	साखी - २७	सतनाम	राज काज सब देखिया, गज गरजे तेहि द्वार।	सतनाम
सतनाम	बाज पखेरु हाथ लिए, यह शोभा दरबार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	हांकयो रथ पंथ चली भयऊ। गये कृष्ण पाण्डव जहां रहेऊ।२६२।	सतनाम
सतनाम	पांचों जने बैठ एक साथ। देखी कृष्ण कहं नायो माथा।२६३।	सतनाम	भूखा प्यास पाक पकाना। रुजु किन्ह सादर बहु जाना।२६४।	सतनाम	पाय परसाद आयसु किन्हा। पिछै वैन कहन तब लिन्हा।२६५।	सतनाम
सतनाम	दुर्योधन मति भर्म भुलाना। वचन हमार कछु नहि माना।२६६।	सतनाम	बोले गर्व गरज अति फूला। ममता मद भर्म मुख खुला।२६७।	सतनाम	आपन प्रभुता आपुहिं कहई। अहे भुजा बल दुजा ना अहई।२६८।	सतनाम
सतनाम	अइहें दल तोहि सब कहं दलिहे। अर्जुन शीश धरि विसु पर मलिहें।२६९।	सतनाम	कथा वचन मम बहुत सुनाई। निगम नीति कहि तेहि समुझाई।२७०।	सतनाम	चुभे हृदय नहि अति कठोरा। राज काज सभ महि है मोरा।२७१।	सतनाम
सतनाम	करि संग्राम काम तब होइहें। काटी कटक गरद सब मिलिहे।२७२।	सतनाम	साखी - २८	सतनाम	अघ मज्जन गर्व भज्जन, सो मम तोहरे साथ।	सतनाम
सतनाम	करो पतन दुर्योधन, तुमको करो सनाथ॥	सतनाम	17	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	अर्जुन अरज किन्ह कर जोरी। तुम बुद्धि सागर मम बुद्धि थोरी।२७३।	सतनाम	सरिता सिन्धु एक नहि अहई। सिन्धु के गुण सरिता नहिं लहई।२७४।	सतनाम	तुम परमात्म आत्म जानी। जल थल बिम्ब सभे पहिचानी।२७५।	सतनाम
सतनाम	सभ घट ब्रह्म व्यापक कहेऊ। अब खण्डित गुण किमि कर रहेऊ।२७६।	सतनाम	पशु पंछी चराचर जेता। सब में कहेऊ वचन प्रभु एता।२७७।	सतनाम	गुण दोष दुवो कहेव विवेका। गुण है एक ज्ञान गही टेका।२७८।	सतनाम
सतनाम	पाप पुन्य तुमहि कहि दीन्हा। जीव के घात पाप लिख लीन्हा।२७९।	सतनाम	धर्म कथे अधर्म किमि कहेऊ। जीव कर घात पुण्य वहिगएऊ।२८०।	सतनाम	कहो जो सब यह प्राण हमारा। गीता ज्ञान मंह किन्ह प्रकारा।२८१।	सतनाम
सतनाम	उलटि पलटि नीके कहि दीजै। सार भाग सोई फल लीजै।२८२।	सतनाम	साखी - २६	सतनाम	आत्म दरस विवेक करि, कहि दिहो प्रभु ज्ञान।	सतनाम
सतनाम	दर्पण टूक करोड़ है, नहि दुजा कोई आन॥	सतनाम	छन्द तोमर - ६	सतनाम	इमि सत शब्द न सार, तहां काया कर्म हंकार॥	सतनाम
सतनाम	जहां घात कर्म जो किन्ह, सो ब्रह्म मम छिन लिन्ह॥	सतनाम	इमि देव दैत्य है दोग, जो ब्रह्म ऐसा होय॥	सतनाम	इमि संत सुखा हित आनि, इमि घात कीन्हो जानि॥	सतनाम
सतनाम	वोय ताड़ूका बल जोर, जेहि दशन चमका अंजोर॥	सतनाम	मम प्रथम ही किन्हो घात, मुनि ज्ञान गुण सुख बात॥	सतनाम	मम वीर बड़ प्रचण्ड, गुण अतीत गर्व अखण्ड॥	सतनाम
सतनाम	जल सिन्धु गहीर गम्भीर, इमि कटक के भौ भीर॥	सतनाम	जल बांधि मम संग कीश, धरि काटयो रावण शीश॥	सतनाम	पय पिएऊ पुतना जानि, सब रुधिर घौंछि अमानि॥	सतनाम
सतनाम	इमि शिवधर चतुर है चोर, धरी जीभ ऐंठी मरोर॥	सतनाम	यमुना जल पैठि पताल, कारी नाग नाथे विशाल॥	सतनाम	गुण कर्म कंस विकार, धरि चोटी पटके वार॥	सतनाम
सतनाम	जरा सिन्धु सैन सम्भारि, सब दैत मारु पछारी॥	सतनाम	गहि केश कर कृपांण, गहि घौंछ मारेवो बांण॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	18	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द नराच - ६			
सतनाम			बंका शूर पछारा उदर फारा, न्यारे वाको दीन्हि डारि॥		सतनाम	
			शीशुपालहिं मारा चक्र सुधारा, तिरछन धार मम इमि धारी॥			
सतनाम			कौरव हंकारा करो संघारा, सर जोरे सभ दल भारी॥		सतनाम	
			मम भेद निनारा करो विचारा, चर्चा मुनि सब इमि हारी॥			
सतनाम			सोरठा - ६		सतनाम	
			अर्जुन तुम मम हीत, कारज ते कारण बढेयो।			
सतनाम			मम भग्नन कंह हीत, दैत सभे दल मत करो॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			दुर्योधन एक बीप्र बुलावा। निज मुख बैन जो ताहि सुनावा।२८३।		सतनाम	
			बेगि जाहु जहां यदुपति राया। जहां पण्डो ने कटक जुटाया।२८४।			
सतनाम			जो कछु कहे सुनो सभ काना। गुप्त भेद कोई मरम न जाना।२८५।		सतनाम	
			जो वहां सुनो कहो यहां आई। यह निजु अर्थ कहा समुझाई।२८६।			
सतनाम			चले तुरन्त तहां पहुंचे जाई। जहां पाण्डों है यदुपति राई।२८७।		सतनाम	
			गुप्त भाव मत सबकर सुना। जो कछु कहे पाप औ पुना।२८८।			
सतनाम			जहं तंह कहे यहि प्रभुताई। दुर्योधन धरि गर्द मिलाई।२८९।		सतनाम	
			साजि कटक पटको धरि शीशा। येहि वचन बोले जगदीश।२९०।			
सतनाम			फेरि फेरि भेद सभे कुछ लीन्हा। गुप्त भाव वोय केहू ना चीन्हा।२९१।		सतनाम	
			लेके भेद तुरन्तहिं एगऊ। दुर्योधन सिंहासन जहं रहेऊ॥			
सतनाम			साखी - ३०		सतनाम	
			दिन्ह आशीष कर जोरि के, बहुविधि वचन बनाय।			
सतनाम			होय कल्याण राव तोर, कारण बहुत सुनाय॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			है प्रपंच काम नहिं नीका। दुर्योधन मारि हों तुम टीका।२९२।		सतनाम	
			सुनिके मन मगन जरे भयऊ। पांचों पाण्डों सुखी तन भयऊ।२९३।			
सतनाम			साजों रथ बहल सब जोरा। बाण धनुष कर कठिन कठोरा।२९४।		सतनाम	
			जहां तहां चर्चा यहि सुनाई। बिना युद्ध कछु अंश ना पाई।२९५।			
सतनाम			दल है थोर गर्व है केता। समुझि परी जब चढ़ि है खेता।२९६।		सतनाम	
			जैसे बग युथ बहु चतुराई। झपटि बाज कही ठौर न पाइ।२९७।			
सतनाम			तुम को शिव सदा सुख दियेऊ। उनका तन कुबुद्धि होय ठएऊ।२९८।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३३			
			कायर कादर कुटिल हैं, कपटी कर्म बेकार।			
			सोई सनमुख जुझि हैं, दिहें जो तन मन वार॥			
			चौपाई			
			अर्जुन बोले सुनो मम स्वामी। सब विधि तुम हो अन्तरयामी।३१६।			
			कायर कुटिल सब तुम जाना। वीर धीर जग जो, परधाना।३२०।			
			छिपा रहे क्षत्री नहीं सोई। रण में चले विचले फिर जोई।३२१।			
			मुंह छिपाय पीछे पीठ करई। महा पाप अवगुण सब धरई।३२२।			
			पहले रण पर चढ़े जो धाई। भीर पड़े मुंह मोड़ पराई।३२३।			
			पीठ पर घाव दाव जो दीन्हा। औंधी परा कादर गति चीन्हा।३२४।			
			मारे पाप तेही फिरि आवे। सो नहिं सनमुख वीर कहावे।३२५।			
			यहि डर मैं रहो डेराई। कुल के घात पाप बड़ आई।३२६।			
			बन्धु विरोध सुभ नहीं होई। महा अशुभ गौ घात समोई।३२७।			
			तुमहुं ज्ञान गीता मंह भाखा। कुल के घात पाप सिर राखा।३२८।			
			साखी - ३४			
			यही डर मैं डरत हों, हृदया में मम जानि।			
			करो विवेक विचार के, जाते होय न हानि॥			
			छन्द तोमर - ७			
			इमि कहेव तोमर छन्द, तब दैत्य दल मल द्वन्द॥			
			इमि काल कर्म उत्तंग, सभ कटक करि देऊं भंग॥			
			बिनु शीश दीसे सोय, गुण जानि प्रगट सोय॥			
			बिनु रुन्ड मुन्ड है हीन, इमि चक्र चलावों छिन्न॥			
			नहिं शंसय सागर किन्ह, मम पाप पुण्य से भिन्न॥			
			मम अनन्त फंद पसार, सब कटक पुहुमी डार॥			
			जब देखा अर्जुन अंत, इमि काल रूप दुर्दन्त॥			
			इमि गरजि पुहुमि कीन्ह, इमि खाय सब कंह लीन्ह॥			
			फिरि चक्र दीन्हो फेरि, इमि परे पुहुमि ढेरि॥			
			मति भर्म भौ जीव आन, इमि कृष्ण कौतुक जान॥			
			मेटु अन्धकार विकार, सब कटक देखि निहार॥			
			सब धनुष इमि करि हाथ, धरि देख सबकी माथ॥			
			21			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अब कहत कुछ नहीं आय, इमि युद्ध करिए जाय॥ इमि काल कौतुक किन्ह, सभ पाप अपने लीन्ह॥ मम मुख किमि कर मोर, लेऊँ धनुष बान टंकोर॥ छन्द नराच - ७	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बाण टंकोर भौ घनघोरा, सोर परा दल इमि आई॥ तुरे कुदाया रथ चलाया, चहुँ ओर बाण घटा छाई॥ बहुवीर लड़ते पुहुमि गिरते, भीरते सनमुख सो आई॥ परे रथ पर केता तुरे समेता, ऐता बल अर्जुन पाई॥ सोरठा - ७	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	लड़े भिड़े सब वीर, कटक सबे प्रलय कीयो। दुर्योधन रहे ना थीर, सेना सभे प्रलय भयो॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दुर्योधन के प्रलय भयऊ। एको वंश गृही नहि गयऊ।३२६। भरेव खप्पर देवी रंग माती। रुधिर पीवहिं सब बहु विधि भाँति।३३०। बाजत नौबत जब रण जीता। पांचों पाण्डो कृष्ण भव हीता।३३१। युधिष्ठिर राज पदवी इमि पाई। तिलक दिया सिर छत्र फिराई।३३२। सिंहासन आन यहि विधि भाँति। दर पर खड़े सो जाति अजाति।३३३। कवि आखर करि सुजस सुनावे। ब्राह्मणभांट दुआरे गावे।३३४। गज औ तुरे रथ बहु केता। राज समाज सभे गुण ऐता।३३५। हर्षित पांडव बहुविधि नीका। विपति विहाय सभै गुण जीका।३३६। धन औ धाम सबै विधि भयऊ। आपन प्रभुता इमि गुण कहेऊ।३३७। राज काज मद केहि नाही अहई। पांचों पाण्डव युधिष्ठिराई।३३८। साखी - ३५	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऐसन कौतुक कृष्ण के, यहि विधि कर्ता किन्ह। काल दशा वसी जगत है, पुरुष इनते भिन्न॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया सुनो संत हमारा। दास पास जिन्ह ज्ञान विचारा।३३६। विवेक बिना कोई भेद न पावे। सुमित सार गुण सो पद गावे।३४०। चिन्हो केवट जिन्ह जाल बनैऊ। बाझे मछ निकलि नहि गयेऊ।३४१। निरंजन काल खम्ह यह भयऊ। इनके टारि कोई नहि गयऊ।३४२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	22	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	प्रथमहि जब पुहुमि पर अयऊ। महावीर बल इनकर कहेऊ।३४३।	सतनाम	पुरुष भेजा पुहुमी पगु दीन्हा। होत युद्ध जीत तेहि लीन्हा।३४४।	सतनाम	हम तुम भ्राता युद्ध न किजै। पिता छपाय राज कहं लीजै।३४५।	सतनाम
सतनाम	बहुत भांतिन तेहि कायल कियऊ। पिता छपाय धृग जग जियऊ।३४६।	सतनाम	दस अंश निरंजन वीरा। ग्यारह अंश सुकृत रण धीरा।३४७।	सतनाम	दुबो बरोबर ज्ञान किमि आवे। युद्ध करन के बहु विधि धावे।३४८।	सतनाम
सतनाम	साखी - ३६					सतनाम
सतनाम	महा दुबो भट वीर हैं, नष्ट करे जीव जाय।					सतनाम
सतनाम	करो विवेक विचार के, अब किछु करो उपाय।।					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	जब मैं पुहुंप दीप चल गयऊ। जहां पुरुष सुख सेज बनैऊ।३४९।	सतनाम	करि सलाम विनय बहु किन्हा। चरण छुई रज माथे लिन्हा।३५०।	सतनाम	धान धान पुरुष तब कहेऊ। जीते काल विलम्बन किएऊ।३५१।	सतनाम
सतनाम	दस अंश घौंच के लिन्हा। एक अंश जग प्रगट किन्हा।३५२।	सतनाम	कर-कोमल सतशील सुभाऊ। मधुर प्रेम ज्ञान गुण गाऊ।३५३।	सतनाम	तुम सिर पर मैं सदा सहाई। तोरुं कठिन काल चतुराई।३५४।	सतनाम
सतनाम	सोवत जागत मम तुम पासा। जहां रहो तहां करो निवासा।३५५।	सतनाम	जो दुःख देइ ताहि दुख दीहों। अदव दिखाय एहि विधि लीहों।३५६।	सतनाम	यह वर सतपुरुष ने दिन्हा। हृदय वचन मान मम लिन्हा।३५७।	सतनाम
सतनाम	जेहिं में खुसी पुरुष का अहई। ज्यों डर डरो ज्ञान किमि कहई।३५८।	सतनाम	साखी - ३७			सतनाम
सतनाम	हाकिम हुक्म जगत में, कर्ता कहा विचार।					सतनाम
सतनाम	अदल करो जग विदित है, इमि जीव जाहिं न हार।।					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	हंस दसा निर्मल गुण गावे। हंस दसा मनि मुक्ता पावे।३५९।	सतनाम	हंस दसा नीर क्षीर बिलगावे। जैसे दहि औं घृत अलोवे।३६०।	सतनाम	को है नीर क्षीर केहि कहई। को है बुद्धि ज्ञान किमि लहई।३६१।	सतनाम
सतनाम	जैसे शिव शक्ति संग वासी। शिव है ज्ञान माया है दासी।३६२।	सतनाम	भया ज्ञान तव माया अनीता। इमि बुझिए सतगुरु के मंता।३६३।	सतनाम	क्षीर नीर संस्सृत सब अहई। दुहत दूध बिलगि किमि कहई।३६४।	सतनाम
23						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जल है ज्ञान विलग होय रहई। दुध बुद्धि के निकट न गहई।३६५।	सतनाम	विवरण किन्ह सुमित इमि चिन्हा। घैंचि नीर क्षीर छोड़ि दिन्हा।३६६।	सतनाम	कवि नहिं जानहिं याका भाऊ। सतगुरु गिना गमि नहि पाऊ।३६७।	सतनाम
सतनाम	सभ मिलि कहेव क्षीर उन्हीं पिएऊ। क्षीर नीर का यह गुण अहेऊ।३६८।	सतनाम	दुई भाग क्षीर यह अहई। एक भाग जल भीतर रहई।३६९।	सतनाम	क्षीर से नीर जो लिन्ह निकारी। विलग भई सब बुद्धि बेकारी।३७०।	सतनाम
सतनाम	साखी - ३८					सतनाम
सतनाम	हंस वंश गम्भीर गुण, गुण गामी गुण ज्ञान।					सतनाम
सतनाम	नीर क्षीर विवरण करे, यहि विधि विमल अमान॥					सतनाम
सतनाम	छन्द तोमर - ८					सतनाम
सतनाम	इमि कहेव तोमर छन्द, दुख दुरि दुर्मति द्वन्द॥					सतनाम
सतनाम	गहि गहेव निर्मल ज्ञान, इमि विमल पद निर्वान॥					सतनाम
सतनाम	सो हंस वंश शरीर, वोय विमल बैन गम्भीर॥					सतनाम
सतनाम	बक कहेव बहुत अघोर, इमि काल कुबुद्धा चोर॥					सतनाम
सतनाम	करि भेष विविधि अनंग, मन काम कौतुक रंग॥					सतनाम
सतनाम	करि ताल मृदंग समाज, जग लोभेव इमि सुखसाज॥					सतनाम
सतनाम	आनन्द गुरु पद भाव, मम मुक्ति को पद पाव॥					सतनाम
सतनाम	बिनु शीश चिन्हे चोर, तन दुःख दिहे पीर॥					सतनाम
सतनाम	लिखि लेखा कागज जान, इमि करे जग जीव हानि॥					सतनाम
सतनाम	सभ धर्म धरेव निरंकार, दिहें पाप पुंजी डार॥					सतनाम
सतनाम	बिनु दया दरसे काल, इमि मारेव बाण विशाल॥					सतनाम
सतनाम	जहां पत्थर पानी पवन, नहि बैन बोलत मवन॥					सतनाम
सतनाम	नहिं पांव पौरुष पाय, जिमि रोवत घर के जाय॥					सतनाम
सतनाम	अघ पाप अघ उर लिन्ह, इमि उलटी झुलुहा किन्ह॥					सतनाम
सतनाम	छन्द नराच - ८					सतनाम
सतनाम	गर्व सो गामी विसरेव स्वामी, अतित वचन गुण बहुराता॥					सतनाम
सतनाम	वेद पुनीता पाहन हिता, परे भवन में पढ़ि गीता॥					सतनाम
सतनाम	यम जीव जीता भया अनिता, हिता कोई नहि भय मीता॥					सतनाम
सतनाम	कहे सतगुरु ज्ञाता निर्मल बाता, मातेव मद सो संग कीता॥					सतनाम
सतनाम	24	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - ८			
सतनाम			ऐगुन गुण को भाव, काल कठिन वाजी रचो॥ बहुरि न ऐसो दाव, फेरि पिछे पछताइहो॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			ऐसन चरित्र कियो वनवारी। अनन्त फन्द गुण को निरुवारी।३७१।		सतनाम	
			भारथ भरि अनरथ सब कियऊ। दिल के कपट कठिन मत ठयऊ।३७२।			
सतनाम			पाप ताप पाण्डव सिर दीयऊ। कुल के घात पाप लिख लियऊ।३७३।		सतनाम	
			किन्ह चरित्र भर्म सब दिखयऊ। काल कर्म करसी कर अयऊ।३७४।			
सतनाम			इन घर आनन्द बहुविधि भांति। राज काज मद सब कोइ मांति।३७५।		सतनाम	
			छूटा विवेक एक नहि रहेऊ। प्रभुता पाय पाप सिर भयऊ।३७६।			
सतनाम			पाप पुण्य वनिज सब अहई। अपने हाथ आपु पगु दहई।३७७।		सतनाम	
			सुख सम्पति सब विधि चतुराई। अवगुण करही दोष प्रभु लाई।३७८।			
सतनाम			जब होय नीक आपन गुण गाथा। अवगुण परे करे प्रभु हाथ।३७९।		सतनाम	
			ऐसन मत जगत गुण हीता। कहो विवेक ज्ञान गुण गीता।३८०।			
			साखी - ३६			
सतनाम			देव दैत जग दोय है, विद्या वेद गुण सार।		सतनाम	
			दैत मारि देव कर रक्षा, यह छल मम गुण वार॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			राय युधिष्ठिर भवन में गयऊ। निंद परत सपना इमि भयेऊ।३८१।			
सतनाम			काल घटा चहुं ओर घेरि आया। रुधिर बुन्द वर्षा झरि लाया।३८२।		सतनाम	
			रुधिर रंग अंग सभा भएऊ। सगरी महल एहिविधि भएऊ।३८३।			
सतनाम			संशय सागर बहुविधि व्यापा। अवगुण कवन पाप तन तापा।३८४।		सतनाम	
			खोलि पलक देखत तब भयऊ। शून्यकार कहिं नजरि न अयऊ।३८५।			
सतनाम			उठेव तुरत वस्त्र सब झारी। अपने अंग रंग देखु विचारी।३८६।		सतनाम	
			रुधिर रंग कतहिं नहिं देखा। अचरज बात इमि करि पेखा।३८७।			
सतनाम			बाहर निकलि देखा ब्रह्मण्डा। कतहिं न वर्षत बुन्द अखण्डा।३८८।		सतनाम	
			छोड़ि अंजरि ऐन में गयेऊ। भवन भयावन देखत भयेऊ।३८९।			
सतनाम			गुप्त मंत्र अपने दिल राखों। रइनि वीते वासर होय भाखो।३९०।		सतनाम	
			साखी - ४०			
सतनाम			अचरज कवन भवन में, भर्म भया मोहि आन।		सतनाम	
			अब तो सयन साधि मैं सोवों, रहो पिछोरा तान॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	नींद परत बिन्द सभ देखा। सगरी सेना घायल करि पेखा।३६१।	सतनाम	करहि सोर रोदन रीरीआई। महा दुखि तन देखि न जाई।३६२।	सतनाम	देखिहिं भवन में भूत बैताला। बिना रुण्ड मुण्ड सब काला।३६३।	सतनाम
सतनाम	दबरी चलहिं पुहुमि पर गिरहीं। शोर करही आपस में लड़हीं।३६४।	सतनाम	देखत भयो भर्म इमि भारी। महा कल्पना कष्ट बेकारी।३६५।	सतनाम	ऐसन काल कर्म भौ भारी। रैनि बीते वासर उजियारी।३६६।	सतनाम
सतनाम	सोचत-मोचत चित अनुरागा। जनु अघ पाप छेकन मोहि लागा।३६७।	सतनाम	मुख मंजन किन्हो असनाना। विप्र वोलाय दियो कुछ दाना।३६८।	सतनाम	किन्ह स्नान संयम गुरु ज्ञाना। दक्षिणा दिन्ह विप्र बुद्धिमाना।३६९।	सतनाम
सतनाम	मन के भरम तबहु नहिं गयऊ। यह गति लीला लखि नहि अएऊ।४००।	सतनाम	साखी - ४१	सतनाम	संशय सर्व व्यापिया, बहुविधि किया उपाय।	सतनाम
सतनाम	चर्चा करो कृष्ण से, सुनो श्रवण चित लाय।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	चले तुरन्त कृष्ण पंह गयऊ। कर जोरि विनय वचन तब कहेऊ।४०१।	सतनाम
सतनाम	ए स्वामी मै अचरज देखा। विघ्न भरम काल कर देखा।४०२।	सतनाम	सोवत सैन भवन में रहेऊ। वर्षत रुधिर घटा घन छयऊ।४०३।	सतनाम	देखत भवन भरम भौ भारी। सगरो महल रुधिर रंग डारी।४०४।	सतनाम
सतनाम	खोलि पलक फेरि देखत भयेऊ। शून्यकार कहीं नजर न अये ऊ।४०५।	सतनाम	बहुरि पलक फेरि मुंदत भयेऊ। करहिं रोदन राग अति पयेऊ।४०६।	सतनाम	लरहिं भरहीं फेरि जात पराई। जिमि पर खसहीं घायल सब आई।४०७।	सतनाम
सतनाम	बिना रुण्ड मुण्ड सब देखा। भूत बैताल करम कर रेखा।४०८।	सतनाम	यही विधि संशय सोग जो भयऊ। करे ग्रास काल जनु अयऊ।४०९।	सतनाम	जन्म प्रसंग संग तुम दासा। यह अचरज किमि भया तमाशा।४१०।	सतनाम
सतनाम	साखी - ४२	सतनाम	ऐसन काल करम यह, भरम भया मोही आय।	सतनाम	तुम बिसम्भर विश्व पर, मुझ से कहो बुझाय।।	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	कहों सत मिथ्या नहीं बाता। सुनो युधिष्ठिर यह भ्रमराता।४११।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कूल वधत तुम मूल उपारी। डार पात पल्लव सभ झारी।४१२।	जो तुम कटक काटी सब गयऊ। वर्षत रुधिर रंग सभ भयऊ।४१३।	मारेव बन्धु विधवा सभ भयऊ। रोदन करहि विपत्ति दुःख पयऊ।४१४।	रुण्ड मुण्ड जिमि पर गिरेऊ। सो सभकाल छेकत तुम्हें भयऊ।४१५।	शूरवीर कादर सब भयऊ। सो सब धरम अपावन कियऊ।४१६।	शूर रहा सो शूरपुर गयेऊ। कादर नरकहिं भरमित भयऊ।४१७।	सोजढ़ जन नहि जानत वाता। करत विषाद कल्पना राता।४१८।
तुम सुजान जानि प्रमीना। सब विधि आगर अग्र प्रवीना।४१९।	जीवकर घात पाप बड़भयऊ। वोयल दिये बिनु ठवर नहिं पयऊ।४२०।	साखी - ४३	बोले कृष्ण विवेक करी, कर्ता कर्म जो किन्ह॥	भर्मित भवन परे सो प्राणी, दया दरद बिनु हिन॥	छन्द तोमर - ६	बिनु दया धर्म कर नास, यम डारिया ग्रीव फांस॥
बहु वेद विमल बखान, इमि पाप पुण्य नहिं जान॥	इमि धर्म अधर्म हेत, जीव घात करि भौ प्रेत॥	इमि वोयल अंग अपार, सो भर्मित भव जल वार॥	भौ कृमि कागा हीन, नहि वचन प्रेम प्रवीन॥	दुःख दारुन दावा किन्ह, भव भरम भटकेवो हिन॥	नहिं संत मत कुछ ज्ञान, दुःख दारुन सांझा बिहान॥	विश्वास जीव करि घात, सो परे भव जल जात॥
मीन मांस विघिन विनास, किमि मुक्ति महिमा नास॥	इमि गीता ज्ञान न मानी, धरि तेग हति जीव जानी॥	करि वंश घात विरोध, भंग अंग पापहि रोध॥	जीवात्मा मम जानी, जिन्हि प्राण पति के मानी॥	मम दृष्टि सृष्टि अमान, तीन गुण गति पहिचान॥	प्रतिबिम्ब घट घट जानी, घट विमल ब्रह्म बखानी॥	इमि जगत भगत हम मानी, मम गुण इमि पहिचानी॥
छन्द नराच - ६	कूल कर घाता सोतन तापा, तप्त भया दुख इमि दहिऊं।					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	धरी जीव फांसा पुण्य के नासा, शासन जम जीव दुख सहिऊं॥ वेद पुराना दरद बखाना, दया बिना भव बीच रहिऊं॥ भगति विरागा दुर्मति त्यागा। दाग लगा गुण इमि कहिऊं॥ सोरठा - ६ सुनो युधिष्ठिर राव गुण ऐगुण कहं देखिए। निज मुख वचन सुनाव, पाप कठिन यह काटि हो॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मम तो पाप पुण्य कहं जानी। तुम्हरे कहे भया जीव हानी।४२१। तुम्हरे कहे भरम अयऊ। अवगुण पाप हमरे सिंह दियऊ।४२२। तुम्हरे कहे भया कुल नासा। तुम्हरे कहे परा जम फांसा।४२३। यह प्रपंच काम तुम कियऊ। मम तुम भगत दया छिन लियऊ।४२४। तुम विश्वास भया यह घाता। तुम्हरे कहे पाप तन राता।४२५। घाट से अवघट दिन्हो डारी। तुम प्रपंच मैं बुझा विचारी।४२६। धृग जीवन धृक राज हमारा। का दृग देखे मुग भरम विकारा।४२७। केहरि कूप करम नहि जाना। कूद परा पीछे पछताना।४२८। मरकट मुठि हठ पटको काले। आपु बधाने जमके जाले।४२९। लाल फूल सुगना चित लोभा। अति सुन्दर फल देखत चोभा।४३०। उड़िगयो तूल तांवरि तब अयऊ। तुम विश्वास घात सिर पयऊ।४३१। साखी - ४४ जैसे गज गयंद यह, फिटिक शीला हठि जाय। दशन टूटा पछताव भव, का रसना गुण गाय॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सुनो भीम अर्जुन तुम आई। सुनो नकुल सहदेव गुसांई।४३२। युधिष्ठिर सृष्टि में दृष्टि अनूपा। ऐसन जग में भयो न भूपा।४३३। आदि सतवादी सत कहेऊ। मिथ्या वचन मुख कवहिं न अयेऊ।४३४। राजकाज मद भरम विकारा। ममिता वेइली फूली अधिकारा।४३५। वेइली फूले भंवरा तहां आवे। लेत घानी सुख बहुते पावे।४३६। मैं तुमहारी अन्तर गति जानी। राजकाज इन्ह दिल में ठानी।४३७। तब मम बोलेवो बचन गुण हीता। कौरो मारि कटक दल जीता।४३८। इन्हके देव राज सुख साजू। सब विधि आनन्द मंगल राजू।४३९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				
सतनाम	राजकाज यह पाप के मूला। कुल के घात धर्म नहि फूला॥ तप से राज नरक फेरि होई। बहुत नृप जग गये विगोई॥ साखी - ४५	सतनाम	जीवकर घात विदित है, विषय वास रह सोय। कहेव गीता गुण हित करि, प्रीति भजन जेहि होय॥ चौपाई	सतनाम	आपन बात आप मैं जाना। तुम्हें दोष किमि देऊं भगवान॥४४०॥ दर्वे सर्वे पुलिकत भयेऊ। दया धरम गुण इमि कर अएऊ॥४४१॥ भयो मेहर मणि प्रेम निजु ज्ञाता। सुनो वचन मम कहों विधाता॥४४२॥ जाहि से पाप ताप नहिं होई। कर्म कारि निर्मल गुण सोई॥४४३॥ जाहि से घात पाप मेटि जाई। भव में तरनी बुड़त न पाई॥४४४॥ नरक अगुढ़ कुण्ड भव भारी। दया करहु तब लेहु निकारी॥४४५॥ संत से अन्त मत नहि दुजा। पदुम पावन पद निश्चय पूजा॥४४६॥ संत के निकट विकट तुम नाही। अटक परे सकंट मेटि जाहिं॥४४७॥ साधु सरस गुण सबसे नीका। कुमति विहाय राज गुण फीका॥४४८॥ मोरे हृदय भक्ति वैराग। पाप ताप मति भौगो कागा॥४४९॥ मति मराल यह किमि करि आवै। बहुरि नष्ट कष्ट मेटि जावै॥४५०॥ साखी - ४६	सतनाम	जाते नरक उबार होय, पुनि होय ब्रह्म पुनीत। मम तुम दास पास हों, मेटा भरम अनीत॥ चौपाई	सतनाम	कहें कृष्ण सुनो नृप राया। कुल के घात पाप तन आया॥४५१॥ तुम से मम सदा हितकारी। वेद विहित इमि कही निरुवारी॥४५२॥ यज्ञ प्रसंग साधु सब आवे। भोजन पाय निर्मल गुण गावे॥४५३॥ देश देश से नेवती ले आवो। यज्ञ पावन करि कुण्ड खनाओ॥४५४॥ अर्ध घांट गगन में छाजे। करि प्रसाद घांट तब बाजे॥४५५॥ जय जय मंगल होय उचारा। पाप ताप तन जाय तुम्हारा॥४५६॥ एहि विधि करो यज्ञ के साजा। मम वचन सुन लीजे राजा॥४५७॥ मथुरा काशी औ प्रयागा। आवहि साधु सब सुमति सुभागा॥४५८॥ जम्बु द्वीप जग विदित प्रधाना। भेख अलेख आवहि भगवाना॥४५९॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				

29

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तपसी	मौनी	दुधाधारी।	ओढ़े	बाघम्बर	वस्त्र डारी।४६०।
सतनाम	भेख	अलेख	है	विधिधि	स्वरूपा।	कन्द मूल फल खाही अनुपा।४६१।
सतनाम	उर्ध	बाँहु	औरो	संन्यासी।	भक्ति भाव	सुमिरहि अविनासी।४६२।
सतनाम	साखी - ४७					
सतनाम	आवहिं भेख अलेख सभ, नेवति जेंवावहु ताहि।					
सतनाम	सांच वचन मैं कहत हों, दुरमति दोविद्या नाहि॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	युधिष्ठिर	जहां	तहां	न्योता	भेजा।	विनय वचन जहां तहां सब लेजा।४६३।
सतनाम	राजा	यहि	महि	मख	बहु	भांती। लगे टहल में जाति सुजाति।४६४।
सतनाम	खजाना	खोल	सब	चीज	मगाया।	घी मधु शक्कर सब लाया।४६५।
सतनाम	वेद	विहित	करि	कुण्ड	खनाया।	अर्ध घंट आकाश ही छाया।४६६।
सतनाम	चले	सभनि	मिलि	भेख	संवारी।	लगा निशान पिताम्बर भारी।४६७।
सतनाम	भेख	अलेख	सब	गनिये	केता।	गेरुआ वस्त्र ओढ़े कोई स्वेता।४६८।
सतनाम	गले	में	माला	तुलसी	के	आना। संत असंत भेख भगवाना।४६९।
सतनाम	करि	प्रसाद	भया	सभ	ताजा।	पूर्ण जग भया नहि काजा।४७०।
सतनाम	भव	पछितावा	कहा	नहि	जाई।	अवगुण तन में रहा समाई।४७१।
सतनाम	संसय	सागर	भागर	रेता।	कुल सभ मरि मरि भै	गौ प्रेता।४७२।
सतनाम	भौ	पछताव	गरब	यह	गामी।	तेजि अमृत यह विधि भौआमी।४७३।
सतनाम	साखी - ४८					
सतनाम	गये युधिष्ठिर कृष्ण पंह। बोलेव बचन विचारी।					
सतनाम	विनय किन्ह कर जोरि के, सुनहु कृष्ण मुरारी॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	बहु	विधि	किन्ह	यज्ञ	के	साजा। अवगुण कवन घंट नहि बाजा।४७४।
सतनाम	रुजु	किन्ह	पाक	पकवाना।	बैठे	भेखा सभे भगवाना।४७५।
सतनाम	मीठा	फल	अरु	मधुर	मिठाई।	दधि शक्कर बहु विजन बनाई।४७६।
सतनाम	कहों	वचन	सुनो	गुण	गामी॥	सब विधि तुम हो अन्तर्यामी।४७७।
सतनाम	बहु	विधि	भेष	जो	विविध	बनाया। सतगुरु अंश नहि दल में आया।४७८।
सतनाम	मृथ्या	साधु	सब	संसृत	अहई।	पाखण्ड धर्म ज्ञान सभ कहई।४७९।
सतनाम	सतगुरु	बालक	भोजन	करावो।	यज्ञ सांगी	निजु मंगल गाओ।४८०।
सतनाम	पूरण	भक्ति	ज्ञान	गुण	गाजे।	भेष अलेख छत्र सिर छाजे।४८१।
सतनाम	30					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	रहे कहां वोय कवने देशा। श्री कृष्ण निज कहो संदेसा।४८२।	सतनाम	उनके जाय तुरन्त ले आवो। बहुरी विनय प्रसाद कराओ।४८३।	सतनाम	साखी - ४६	सतनाम
सतनाम	श्री कृष्ण कह दीजिये, मेटे करम हमार।	सतनाम	जाहि भोजन यज्ञ सांगी हो, उतरही भव जल पार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	हमसे उनसे दर्शन भयेऊ। विमल ज्ञान यह बहुविधि कहेऊ।४८४।	सतनाम	किन्ह विचार हंस गुण सारा। दिव्य दृष्टि जाके उजियारा।४८५।	सतनाम	काया प्रसिद्ध सुन्दर दोऊ नैना। विमल विमल पद बोलत बैना।४८६।	सतनाम
सतनाम	श्वेत वस्त्र से अंग छिपाया। नहि सिर टोपी भेख बनाया।४८७।	सतनाम	नहिं बाधम्बर नहि मृगछाला। नहि तिलक नहि शेली माला।४८८।	सतनाम	स्वपच भक्त सुदर्शन नाऊँ। बसे गोपपुर बाहर गाऊँ।४८९।	सतनाम
सतनाम	बहुत विनय करि तेहि ले आवो। भीतर मन्दिर में भोजन कराओ।४९०।	सतनाम	जय-जय मंगल होय उचारा। बाजै घांट होय झनकारा।४९१।	सतनाम	युधिष्ठिर गये भीम के पासा। जाय किन्ह वचन परकाशा।४९२।	सतनाम
सतनाम	गोपपुर गांव तहां चलि जाई। स्वपच भगत के बेगि ले आई।४९३।	सतनाम	श्री कृष्ण कहि दिन्ह संदेशा। दुर नहि बसहिं निकट है देशा।४९४।	सतनाम	जाहु भीम स्वपच के पासा। जाय वचन कहो परकासा।४९५।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५०	सतनाम	जाहु भीम स्वपच जहां, बोलि हो वचन विचार।	सतनाम	हुत प्रेम मोद मन भरिहो, तोहरी सब अनुहार॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	गये भीम गोपपुर गाँऊ। भक्त सुदर्शन ताके ठाँऊ।४९६।	सतनाम	सुनो संत कहो निज बाता। सभ विधि लायक तुम गुरुज्ञाता।४९७।	सतनाम
सतनाम	राय युधिष्ठिर वेगि बुलाया। तुम परसाद महातम पाया।४९८।	सतनाम	आये भेख महा दल साजा। उनके भोजन घांट न बाजा।४९९।	सतनाम	श्री कृष्ण भेद कहि दीन्हा। स्वपच भगत सत के चिन्हा।५००।	सतनाम
सतनाम	स्वपच भगत के भोजन कराओ। सभ विधि आनन्द मंगल गावो।५०१।	सतनाम	स्वपच बोले तत्व सम्भारी। यह लघु वचन मृथ्या तुम डारी।५०२।	सतनाम	केहु के द्वार मन्दिर नहि गयऊ। मम प्रसाद कतहिं नहि पयऊ।५०३।	सतनाम
सतनाम	31	सतनाम		सतनाम		सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुखा सुखा है भोजन हमारा। साहब भोजे सो करे अहारा।५०४।	राजनेति विषय विस्तारा। जीव के घात विविध सिर भारा।५०५।	तीन सौ साठ दिन जो कहई। एक पाप वोय निशदिन करई।५०६।	उन्ह घर भोजन धर्म कर नाशा। अमृत तेजि मीच गहि ग्रासा।५०७।	उन्ह घर भोजन धर्म कर नाशा। अमृत तेजि मीच गहि ग्रासा।५०८।	राजा वेश्या धीमर कसाई। इन्ह घर भोजन हम नहि पाई।५०९।	
साखी - ५१	इन्हके निकट विकट है, सुनो भीम चित लाय।	इन्ह घर भोजन पाइये, पाप ताप तन आय॥	चौपाई	भीम क्रोध अंग में आया। नीच जाति किहां हम ही पठाया।५१०।	श्री कृष्ण युधिष्ठिर राई॥ इनके डर हम सदा डेराई।५११।	ऐसा क्रोध भया बाण विशाला। मारो स्वपच जाय पताला।५१२।
आये भीम युधिष्ठिर जहवां। बोले वैन कोपि के तहवां।५१३।	सुपच भगत जाति कुल हीना। श्री कृष्ण बड़ी बात कह दीना।५१४।	गये युधिष्ठिर जहां मुरारी। बड़ि विपत्ति गाढ़ि तन डारी।५१५।	सुपच भगत कवन गुण ऐसा। गन गन्धर्व देवता नहि तैसा।५१६।	यह सब कुदरति मोहि देखाओ। जब सुपच मन्दिर के आवो।५१७।	पुष्कर बड़ा तीर्थों का राजा। करि ये जाय दीपक को साजा।५१८।	भेख अलेख बैठु चहुँ पाती। देखिए प्रतिमा बहु विधि भांति।५१९।
साखी - ५२	मीन मांस भोजन करे, झूठ सांच जेहि पास।	पशु पक्षी सब देखिये, विरला जन कोई दास॥	छन्द तोमर - १०	मम कहत हों उपदेश, इमि सुनो नृप संदेश॥	तुम प्रीतिहित हो मोर, जिमि जैसे चंद चकोर॥	पपिहा जल से नेह, तुम ऐसा भगत सनेह॥
जिमि चन्दा कुमुदिनी वास, इमि जानिया निज दास॥	सभ पाप जाय वोराय, कुल घात जात मेटाय॥	स्वपच भगत है निज सार, तीन लोकते है न्यार॥	वोय हंस विमल स्वरूप, गन गन्धर्व तुले न भूप॥			
32						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम





सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पूर्ण	यज्ञ	नहिं	भया	गुसाई	।	तीन बार झनकार सुनाई ।५३२।
सात	बार	झनकार	बाजे	।	विधि	आनन्द मंगल छाजे ।५३३।
साखी	-	५३				
कुबुद्धि	वचन	तेरो	मन्दिर	में,	कुमति	की अनुहारी।
स्वपच	भगत	गुरु	ज्ञानी,	चले	मन्दिर	के झारी॥
चौपाई						
भक्त	मत	कोई	मरम	न	जाने	। डिम्भ आचार जगत सब माने ।५३४।
कुबुद्धि	वचन	द्रोपदी	भाखा	।	सुपच	भगत जानि दिल राखा ।५३५।
जाहु	भगत	के	वेगि	लेआवहु	।	बहुत तत्व करि भोजन करावहु ।५३६।
गये	युधिष्ठिर	सुपच	पासा	।	छुके	चरन वचन परगासा ।५३७।
तुम	स्वामी	हो	अन्यामी	।	मम	तुम दास चरण गुण धामी ।५३८।
सुपच	भगत	दया	गुण	सागर	।	मति मराल प्रभु अगम उजागर ।५३९।
सुपच	भोजन	बहुरि	जब	कियऊ	।	सब विधि आनन्द मंगल भयऊ ।५४०।
सुपच	भोजन	बहुविधि	राजै	।	भक्ति	महातम सिर पर छाजै ।५४१।
सात	वार	घंटा	झनकारा	।	जय	जय मंगल होत उचारा ।५४२।
गन	गंधर्व	देवता	सभ	धाये	।	प्रदक्षिण करि माथ नवाये ।५४३।
भेख	अलेख	छूअहि	पगु	आई	।	छुई छुई चरण सभहिं सिर नाई ।५४४।
युधिष्ठिर	बोले	धन्य	अवतारा	।	पाप	ताप सब मेटा हमारा ।५४५।
कृष्ण	बोले	यह	सब	गुण	नीका	। सर्व साधु के मस्तक टीका ।५४६।
पांचों	पाण्डव	द्रोपदी	साथा	।	मंगल	गावहीं भयो सनाथा ।५४७।
कृष्ण	आप	प्रदक्षिण	कीन्हा	।	धन-धन	साधु अमर पद चीन्हा ।५४८।
साखी	-	५४				
सबसे	बड़ा	साधु	है,	साधु	से	बड़ा न कोय।
दर्शन	परसन	प्रेम	रस,	आनन्द	मंगल	होय॥
तीन	लोक	में	उदित	है,	सतगुरु	ज्ञान है भिन्न।
छप	लोक	में	छत्र	है,	मुक्ति	पदारथ दीन्हा॥५५॥
ग्रन्थ	विवेक	सागर	पूर्ण	॥		
34						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम